आपातकाल में सृजन फुलवारी

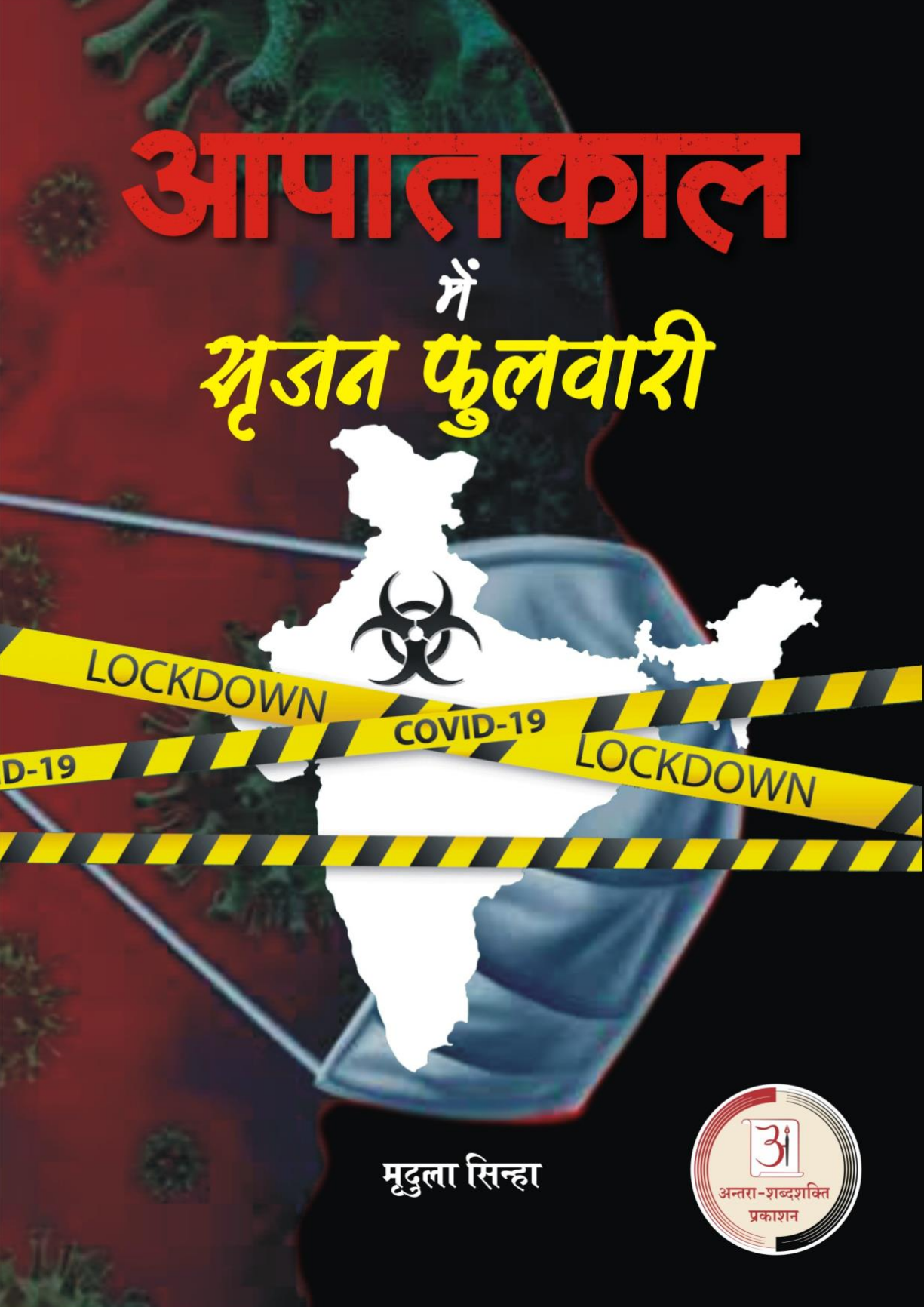

मृदुला सिन्हा

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

मृदुला सिन्हा

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-107-7
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020 **मृदुला सिन्हा**
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY MRIDULA SINHA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	पलायन	6
2.	कुछ सपने	7
3.	दर्द	8
4.	इंसान	9
5.	तुम्हारे	10
6.	बोलो ना	11
7.	सुन रहे हो ना!	12
8.	स्त्री कई रूप हैं तेरे	13
9.	वो मुड़ा पन्ना	14
10.	बारिश की बूंदें	15
11.	दंगे	16
12.	न ब्याहना उस देश	17
13.	तुम गुलाम हो	18
14.	जीवन एक उत्सव	19
15.	रस्मों के दावानल में	20
16.	वो कहानी हूँ	21

पलायन

पलायन
उम्मीदों का सपनों का
या फिर
उस आशियाने का
जिसे बनाने को सब दौड़ पड़े थे
सब छोड़कर
अतीत की मिट्टी में
भविष्य की बीज डालकर
सुनहरी उम्मीदों के साथ चल पड़े
कुछ अच्छे के लिए,
कुछ सपनों के लिए
अपनों के साथ,
घर को देकर नयी उम्मीदें
किसे मालूम था
वो पलायन
शायद इंसानों का भी होगा
रोटी का भी होगा
भूख का होगा
ममता का होगा
और कुछ ना बचेगा शेष
हर तरफ पलायन होगा
बस पलायन,...!

कुछ सपने

बंद मुट्ठियों में भींचें
कुछ सपनों को
कदम कदम पर चलते
सपनों के लम्बे सिलसिलों को
थामे वो खड़ा है
हर रास्ते पर
जहाँ उम्मीदें हैं,
आशाएं हैं,
लौट आने की अपने घर
अपने आने की ओर
ये सजा होगी मिट्टी छोड़ने की
ये सज़ा होंगे अपनों के छोड़ने की
कल बेरोजगारी थी, आज कोरोना
कल कुछ और होगा
पर मिटना हमें ही होगा
सपने जहाँ टूट रहे हैं
अपने जहाँ छूट रहे हैं
क्या भरोसा, अब किसका भरोसा?
बंद है सपने सब
इन बंद मुट्ठियों में,....!

दर्द

दर्द क्या बस इतना ही गहरा है
कि चलते-चलते यूँ ही उकेर दिया जाए
पन्नों पर महज कुछ शब्दों में

या कुछ ऐसा है जो चुभे
टीस की तरह चोट की तरह
सालता रहे अंदर ही अंदर

और रिसता रहे वो हर पल
सब कुछ ऐसा ही है
जैसे सीलती हुई दीवार

बाहर से सब ठीक दिखे
और अंदर ही अंदर एक घुटन
जो तोड़ कर रख दे नीव को भी

शायद ये दर्द भी कुछ ऐसा ही है
हँसता हुआ खुद पर
और खुद को रुलाता हुआ भी।

हाँ दर्द कुछ ऐसा है!
शायद नहीं उकेरा जा सकता चंद पन्नों पर,
नहीं बांटा जा सकता सबसे,
नहीं कहा जा सकता हर किसी से,..!

इंसान

हर दिन भागा है इंसान
कभी खुद से, कभी खुद के लिए
कभी सपनो के लिए
तो कभी अपनों के लिए

छोड़कर मिट्टी अपनी
चलता रहा इस ठौर से उस ठौर
जहाँ दूर तक कोई ठहराव ना हो
बरसो पहले निकला घर से पूरा करने को कुछ सपने

कुछ पेट की भूख
तो कुछ नए आशियाने की तलाश
जरुरी नहीं हर सपने पूरे हो उसके
पर चला वो हर पल, भागा वो खुद से ही

गाँव की मिट्टी,
गाँव के खेत,
गाँव की हरियाली छोड़कर
क्यों नहीं मिल पाती सब खुशियाँ गाँव में ही

कुछ ऐसा हो जब
न छोड़ना पड़े घर को
कुछ ऐसा हो जब
पूरे हो जाए सब सपने घरों में ही
ना छोड़कर जाना पड़े अपना गाँव अपनी जमीं।

तुम्हारे पास

जब ना रहूँ मैं
तो भी वैसे ही आवाज़ देना दिल से,
जैसे मैं तुम्हारे सामने ही हूँ
और कभी चिल्लाकर भी कहना अपनी बातें
मैं वहीं रहूँगी तुम्हारे पास

जब ना रहूँ मैं
फिर भी वैसे ही बातें करना
इधर उधर की मेरी तस्वीर के साथ
और यूँ ही बोलते रहना अनवरत
सच मैं सुनूंगी वैसे ही जैसे अब तक सुनती आयी हूँ
मैं वहीं रहूँगी तुम्हारे पास

जब ना रहूँ मैं
फिर भी समझाना दुनियादारी
अपनी हिचक, अपना गुस्सा,
सब दिखलाना तस्वीर के ही सामने
मैं वहीं रहूँगी तुम्हारे पास

जब ना रहूँ मैं
फिर भी मुझे महसूस करना
मेरी ओर देखना
हर सुबह, हर शाम याद कर लेना
मैं वहीं रहूँगी तुम्हारे पास..!

बोलो ना!

जब भी मैं हारी हूँ खुद से
तुमने मुझे सहारा दिया
आज जब थामना चाहती हूँ
मैं तुम्हारा हाथ
चाहती हूँ तुम्हारी गोद फिर से
जहाँ मैं सिसक सकूँ,
सो सकूँ सुकून से
कहाँ हो तुम बोलो ना,..!
सब रिश्ते अपनी जगह हैं
सबकी अपनी आपाधापी
सब चेहरे के ऊपर चेहरे हैं
रंगों में रंगे हैं हर तरह के
बस तेरा ही आँचल माँ
भागती दुनिया में एक ठहराव था
एक सुकून सा था तेरा बोलना
कितना ही थक कर आऊं माँ
तेरे हाथ से एक कप पानी
और एक कप चाय
तुम्हारा पास में बैठ कर पूछना
सब ठीक है ना
सच माँ,
सब कुछ है पर तेरी कमी
सब कुछ ख़त्म कर देता है
कहाँ हो तुम,,... बोलो ना,..!

सुन रहे हो ना

तुम दरिया थे ना
तुम्हे तो बह निकलना था
अपनी मंजिल की ओर
फिर कैसे खो गए इस भ्रम में कि
सब तुम्हारा है, तुम्हारा ही होगा!

तुम फूल थे ना
तुम्हे तो बस सुगंधित होना था
फैलाना था अपनी महक
फिर से ये भ्रम कि
जो है वही रहेगा हमेशा के लिए!

तुम तो आज़ाद परिंदे थे
तुम्हे तो बस चहचहाना था
आज़ादी के गीत गाते हुए
दूर. तक उड़ान भरनी थी
फिर इस भ्रम में क्यों आ गये कि
ये पूरा आकाश तुम्हारा है और तुम्हारा ही रहेगा!

सुन रहे हो ना
ये भ्रम ही तुम्हें
और तुम्हारी खुशियों को रौंद देगा
और तुम गुलाम हो जाओगे इस मन मोहने वाले भ्रम के
सुन रहे हो ना!

स्त्री कई रुप हैं तेरे

स्त्री कई रुपों हैं तेरे
और रूपों को जीना है तुम्हें
जन्म के साथ ही तय कर दी जाती है
हर उम्र के अलग-अलग रुप
बेटी, पत्नी, माँ और दोस्त का,
हर रूप में तुम्हें अपना श्रेष्ठ देना है

एक निश्छल आईने तरह
जिसमें कोई दरार ना हो ना चनक
कई रुपों में बटी पर
एक होने का भ्रम पाले
तुम्हें श्रेष्ठ देना है
बिना श्रेष्ठ लेने की कोशिश किये

तुम्हें हर लम्हे को जीना है
हर रूपों में मुस्कुराते हुए
चाहे खुद ही टूटी हो
बस तुम्हे जीना है हर हिस्से को
टुकड़े कर अपने अरमानों को
बस तुम्हे निभाना है हर रिश्ते को!

वो मुड़ा पन्ना

कभी-कभी कोई वक़्त
उस मुड़े हुए पन्ने की तरह होता है
जो हम मोड़ देते हैं
बाद में पढ़ने के लिए
और फिर वो कभी नहीं आता

अचानक ही जब उन किताबों को
पलटते हुए
आ जाता है वो मुड़ा पन्ना
एक यादों का लम्बा सफर
चल पड़ता है साथ-साथ

शुरु से लेकर उस लम्हे तक आने का सफर
कैसा होता है वो मुड़ा पन्ना
यादों का साथी
उस अधूरे लम्हे को अब तक जोड़ने की कड़ी
किस कदर साथ हो जाता है
वो मुड़ा पन्ना,....!

बारिश की बूंदें

पहली-पहली बारिश की बूंदें
जब धरती भीग जाती है
उसकी सौंधी-सौंधी खुशबू
किस तरह बचपन तक ले जाती है
एक-एक याद को चित्र की तरह
वो खुशबू
जो याद दिलाती हो बचपन की,
बचपन से जुड़ी हर बात की,
उस बूंदों से धरती का हरा होना
हर ओर हरियाली
जगह-जगह पानी की जमी सतह
और प्रकृति का अद्भुत नज़ारा
वो हरियाली.. वो पानी की धारा
और बारिश में कागज की नाव
मानों उनमें पूरी दुनिया की सैर थी
सच बारिश की बूंदें
यादों को ले जाती है
बचपन की ओर....!

दंगे

पलाश तुम्हारा खिलना
उस लालिमा के साथ
सिंदूरी आभा बिखरी हो हर तरफ
आसमान भी रंगीन तेरे रंग में
और उन पंक्षियों का कलरव
पलाश तुम्हारा आना बसंत में

सोये कितने अरमानों को जगाना
पर इस बार कर दिया
चंद नफरतों ने तेरा ही सौदा
नापाक मंसूबों के साथ
जला दिया क़तरा क़तरा

तुम्हारी लालिमा सिन्दूरी नहीं अब
प्रेम की वहां कोई भाषा नहीं अब
नफरतों के मजहबों के जलते
साये बिखरे हुए उन दंगाइयों के
इस बसंत को भी लहूलुहान कर दिया
पलाश...तेरी कोई अहमियत नहीं

इन रंगों में इन फ़िज़ाओं में
चिथड़े है इंसानियत के,
नफरतों की बोलियों के,
पलाश अब तेरी कोई अहमियत नहीं,...!

ना ब्याहना उस देश

ना ब्याहना उस देश बाबा
जो दूर हो तेरी नज़रों से
जो दूर हो तेरे एक दिन के रास्ते से
जो ना हो इतनी दूर कि
मैं याद करुं और तुम आ ना सको
या तुम याद करो
और मैं दूरियां देखती रहूं
ना ब्याहना उस देश बाबा

जहाँ मेरी खुशियों की खातिर
सौदा करना पड़े अपने सपनों से
जहाँ मेरी हर हंसी की कीमत
चुकानी पड़े तुम्हें अपने आँखों की नमी से
जहाँ बात बात पर
हमारी हैसियत दिखाई जाये
ना ब्याहना उस देश बाबा

मेरे छोटे-छोटे सपनों के संग
छोटी-छोटी खुशी
जब याद करुं तुम्हें शामिल हो तुम मेरे साथ
तुम्हारी हँसी तुम्हारा सुकून है बस मुझसे ही
मुझ बस ब्याहना वहीं
जहाँ समझ हो सबको तुम्हारे त्याग की
एक बेटी के पिता के अरमान की
बस उस देश ही ब्याहना बाबा,....!

तुम गुलाम हो

जब तुम्हारा हँसना, रोना, खुश होना,
दूसरे के हाथ में है
यकीं मानो अब भी तुम गुलाम हो
उसी मानसिकता के,..
गिरी हुई सोच के,..

तुम अगर अपना फैसला नहीं ले सकते
खुद से अपना भरोसा नहीं रख सकते
यकीं मानो परिचायक हो उसी अँधेरे कोने के
जिसके चारो ओर रौशनी है
और वो कोना अब भी अँधेरा

क्यों सौंप दी अपनी खुशियों की चाबी
दूसरे के हाथों में कठपुतली बने बैठे हो
मोहरे की तरह तुम पर शर्तें लगेंगी
कई चाले वो चलेंगे
तुम बस एक चाल ही रहोगे

तुम्हारी खुशियाँ तुम्हारी हैं
तुम्हें लड़ना ही होगा
निकलना ही होगा उस सोच से
निकलना होगा उस गिरी मानसिकता से....!

जीवन एक उत्सव

सच में जीवन एक उत्सव ही है
या तो मना लो हंसकर
गा लो गीत की तरह
और सहज ही इसके क्रम को देखना
हर घटना का साक्षी बनकर
हरपल बीतता हुआ
हर लम्हा जो खुद को संजोता है
कुछ यादों के साथ
भर जाता है इसका पिटारा
फिर एक-एक कर घूमता जाता है
याद आ जाता है सब कुछ
जैसे ये कल की ही बात हो
वो सब पल मुस्कुराते हुए बीतता है
बस ये हम पर है कि
हम इसे कैसे बिताते हैं
अच्छे पल... खुशनुमा यादें दे जाते हैं
और बुरे पल... एक सीख एक सबक
सच इतना ही तो है ये जीवन
उत्सव मना लो हँसकर-गाकर!

रस्मों के दावानल में

रस्मों के दावानल में
मत खो देना अपना अस्तित्व,
परंपरा के वेदी पर चढ़कर
मत गुनगुनाना वो गीत,
जिस पल खो दोगी खुद को
उसी भीड़ में
उन्ही रस्मों में बस खो दोगी खुद को

बाधाएं कई आयी हैं
आगे भी आएँगी
सीता से लेकर अब तक
युगों-युगों से
कब कोई राह सीधी मिली तुम्हें?
कब तुम्हारी कुछ ख्वाहिशें
हँसते हुए हुई है पूरी?

लड़ना पड़ा तुम्हें
हर हाल में
हर काल में
ये पल भी वैसा ही है
लड़ना होगा
जीना होगा
कुछ अलग,
कुछ अपना सा करना होगा
सच... खो ना जाना इन रस्मों के दावानल में...!

वो कहानी हूँ

छिटक गयी दूधिया रातों में जो
वो रोशनी हूँ
दर्द के अथाह सागर में जो डूब गया
वो मोती हूँ
बिखरन हूँ, कतरन हूँ
तेरे सोच की हर कहानी हूँ

बांध ना सकोगे अपनी सोच में मुझे
हर मिटते बिखरते शब्दों की
गहरी अर्थ की सुलझन हूँ
बीत ना पायेगा एक भी लम्हा
बगैर टकराये मुझसे
सागर की लहरों से निकले
हर तरंगों की रवानी हूँ

बिता ना दो मुझे
बस बहते पानी की तरह
बस कह ना लो
मुझे एक कहानी की तरह
वक़्त भी शायद जो ना समेट पायेगा दामन में अपने
उन अनछुई यादों की
एक लम्बी कहानी हूँ!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

मृदुला सिन्हा

E-mail - mridulasinha63197@gmail.com

Mobile - 7870597673

सृजन कार्य हमेशा सकारात्मक परिणाम देता है, आपातस्थिति के अनुरूप व्यवहार, सतर्कता और सुरक्षा की जानकारी के प्रचार प्रसार के लिए सृजन आवश्यक है, इसके साथ ही मन से भय हटाने एवं साहस के संचार के लिए सृजन आवश्यक है। कुछ नया करना एवं नए की जिजीविषा ही हर विषम परिस्थितियों से लड़ने की प्रेरणा देती है। इन साहसिक कार्य से ही इस आपातकाल से निबटा जा सकता है, कुछ लिखना, पढ़ना, नृत्य , पेंटिंग, कुकिंग कुछ भी जो नयापन लाता हो,एकरसता तोड़ता हो। साथ ही यह विश्वास कि परिस्थितियां कितनी भी विपरीत हों, हर ओर निराशा हो फिर भी कोई अलौकिक शक्ति है जो सब संभाले हुए हैं और सदैव अच्छा ही होगा ही निरंतर आगे बढ़ने का साहस देती है। सच मानो आपातकाल और इस वक्त घर में रहना एक अवसर है कुछ नया मनचाहा करने का, अपने अंतस को पहचानने का, छिपी प्रतिभा को बाहर लाने का। सभी अच्छे बुरे समय बीत जाते हैं, वक्त है इनसे सीख कर आगे बढ़ने का और हर चुनौती स्वीकार कर कुछ नया करने का। और आपातकाल में यह सृजन उसी प्रयास का एक हासिल है जिसे अन्तरा शब्दशक्ति ने प्रेरित कर एक नया मोड़ दिया है।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-107-7

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/